सुधा ओम ढींगरा

नाच मेरे जमूरे कि. . .

पंकज सुबीर द्वारा संपादित
विमर्श दृष्टि

मूल्य : 500 रुपए
प्रकाशक : शिवना प्रकाशन सिहोर

डुगडुगी की आवाज उभरती है। एक ऊंचा स्वर सुनाई देता है. . .साहिबान कद्रदान जरा एक नजर इधर भी डालिए. . .आपका एक मिनट इस पापी पेट का सहारा बन सकता है. . .मानता हूं साहब इस समय गरीबों का पेट बहुत से लोग भर रहे हैं. . . आप इस गरीब की ओर ध्यान क्यों देंगें? पर साहब ये तो कुछ सालों बाद पेट भरने आते हैं, छलावे की रोटी थमा कर कई-कई साल हमें अपनी सूरत नहीं दिखाते और. . .और . . .और वर्षों भूखे रहते हैं हम, कोई नहीं लेता है सुध। भूख तो रोज लगती है साहब . . .रोज पेट तो आप लोगों के आने से भरता है, हमारा तमाशा देखने से भरता है। तो हे अन्नदाता!. . .

. . .क्या! क्या कहा आपने? मेरा जमूरा इतना अकड़ कर क्यों बैठा है? क्या कहूं. . .साहब, विदेश घूम के आया है, थोड़ी अकड़ तो होगी न साहब। गरीब हैं तो क्या हुआ? अकड़ पर कोई टैक्स नहीं साहब। जी, क्या कहा. . .? विदेश कैसे गया ये जमूरा। पढ़ने-लिखने में अच्छा था तो दोस्तों ने सोशल मीडिया पर इसकी दोस्ती करवा दी कुछ समझदार लोगों से। उनकी सोहबत का असर, कविताएं लिखने लगा। लोग इसकी कविताएं खूब पसंद करने लगे। आप तो जानते हैं साहब, सोशल मीडिया की कितनी ताकत है! लोग आपस में कम बात करते हैं इस पर ज्यादा बात। बड़ी-बड़ी राजनीतिक पार्टियां, नेता, सरकारें, अभिनेता, अभिनेत्रियां, सब इसकी लपेट में आ चुके हैं। उतना चिड़िया टीवी टुट नहीं करती जितना ये करते हैं। सही कहा साहब आतंकवादी भी इसी सोशल मीडिया से अपना गेम खेलते हैं।'

भीड़ से आवाज उभरती है- 'तुम्हारा जमूरा सोशल मीडिया पर क्या करता है?'

-साहब कहा ना लिखता है, कविताएं . . . हर रोज एक कविता आपको फेसबुक पर मिलेगी इसकी और वहीं से एक दो बड़े-बड़े कविता प्रेमियों के ग्रुपों में जा मिला, जिसमें देसियों के साथ-साथ विदेशी भी थे; जहां इसको बहुत लोगों ने पसंद किया। हजारों से लाखों इसके पाठक बन गए। सच कहूं साहब, किसी का भी सिर घूम जाएगा. . .सौ पचास चमचों से नेता अकड़ू बन जाते हैं, यह तो बेचारा मेरा जमूरा है। तो साहब पिछले दिनों विदेश की एक यूनिवर्सिटी ने इसे बाहर कविता सुनाने और उस पर लेक्चरारने के लिए बुलाया था। दो दिन पहले ही लौटा है, जेटलैक में है। नहीं साहब मजाक नहीं कर रहा। सही है ये बात। मैं भला मजाक क्यों करूंगा। इतना पॉपुलर है इसकी पॉपुलैरिटी देखकर विदेश की यूनिवर्सिटी ने इसे बुला लिया था और इसकी कविताएं अंग्रेजी में अनुवाद भी कर रहे हैं।

खैर आपको यकीन नहीं आ रहा तो मैं कुछ नहीं कर सकता। साहेब ये गरीब की जुबान है, जो लड़खड़ा तो सकती है, झूठ नहीं बोल सकती।

डुगडुगी फिर बजी '. . .देखिए, अंतर्राष्ट्रीय ख्याति पाए हुए जमूरे का करतब देखिये।

भीड़ से आवाज उभरी, 'अरे अंतर्राष्ट्रीय ख्याति वाला जमूरा तेरे लिए क्यों नाचेगा! देख गर्दन कैसे अकड़ी हुई है।'

-क्या बात करते हैं साहब, आजकल सभी अकड़ी गर्दनों वाले नाच रहे हैं। नेता कुर्सी की ताल पर, अभिनेता/अभिनेत्री पैसे की ताल पर शादी-ब्याहों में नाच रहे हैं, अफसर ऊपर वालों की ताल पर और मातहत अफसर की ताल पर, जनता नेताओं की चालों की ताल पर, स्वयं सेवी दलों की नीतियों की ताल पर, कार्यकर्ता विचारधाराओं की ताल पर, दक्षिण पंथी, वाम पंथी सब हीं तो नाच रहे हैं. . .आप भी तो नाच रहे हैं, सब अपने-अपने मतलब की तालों और अपने स्वार्थ के लिए नाच रहे हैं। देश के हित की ताल पर कोई नाचना नहीं चाहता। ऐ साहब, सिर्फ सैनिक है, जो देश के लिए नाचता है, मौत को गले लगाने तक। बाकी सब अपने-अपने लिए नाचते हैं, अपनी चुनी हुई ताल पर।'

भरी आंखों वाले स्वर में- विदेश से आया हुआ मेरा जमूरा मेरे पेट की खातिर, मेरे बच्चों के पेट की खातिर आपके सामने नाचेगा। बड़ा वफादार है, आज के दल बदलुओं की तरह नहीं, जो थूककर चाटते हैं। बेवफाई जिनका प्रमाण-पत्र है। चल मेरे बच्चे खड़ा हो जा, दिखा दे इन्हें आज तूं अपना करतब।'

जमूरे ने घुंघरू बांधें, गोटे वाला दुपट्टा ओढ़ा और नाचने के लिए तैयार हो गया।

-साहेब! अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त मेरा जमूरा आज नाचेगा, आपकी खातिर, मेरी खातिर, मेरे परिवार की खातिर. . .। 'डुग डुग की आवाज के साथ मदारी की आवाज उभरती है. . .

दुल्हनिया मटक-मटक चली, लटक-लटक चली

यूं पग धरती. . .

जमूरा तन्मय होकर नाचने लगा।

लोग तालियां पीटते रहे, तमाशा चलता रहा. . .मदारी गाता रहा। जमूरा नाचता रहा।